संगीत

टिप्पणी:-

- संगीत में इकाई-I, II, III और IV सभी के लिए समान हैं
- संगीत में यूनिट-V से X तक विषय विशिष्ट हैं

यूनिट- I

तकनीकी शर्तें:

संगीत, नाद: अहता और अनाहत, श्रुति और उसकी पांच जातियां, सात वैदिक स्वर, गंधर्व, शुद्ध और विकृत स्वर में प्रयुक्त सात स्वर, वादी- संवादी, अनुवादी-विवादी, सप्तक, आरोह, अवरोह, पाकड़ / विशेष संचार, पूर्वांग, उत्तरांग, औडव, षाडव, संपूर्ण, वर्ण, अलंकार, अलापा, तन, गमक, अल्पत्व-बहुत्व, ग्रह, अंश, न्यास, अपन्यास, अविर्भाव, तिरोभाव, गीता; गंधर्व, गण, मार्ग संगीत, देशी संगीत, कुतपा, वृंदा, वाग्गेयकार मेला, थाट, राग, उपांग, भाषांग, मींड, खटका, मुरकी, सूत, गत, जोड़, झाला, घसीट, बाज, सद्भाव और माधुर्य, ताल, लय और विभिन्न लयकारी, हिंदुस्तानी संगीत में सामान्य ताल, सप्त ताल और 35 ताल, तालदास प्राण, यति, ठेका, मात्रा, विभाग, ताली, खाली, क्विडा, पेशकार, उठान, गत, परन, रेला, तिहाई, चक्रदार, लग्गी, लड़ी, मार्ग-देशी ताल, अवतरण, साम, विषम, अतिता, अनागत, दसविधा गमकस, पंचदश गमकस, कटपयादि योजना, 12 चक्रों के नाम, बारह स्वरस्थान, निरावल, संगति, मुद्रा, षडंग, अलापना, तनम, काकु, अकर्मत्रिक संकेतन।

यूनिट द्वितीय

लोक संगीत

भारतीय लोक गीत/संगीत की उत्पत्ति, विकास एवं वर्गीकरण।

लोक संगीत की विशेषताएँ.

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोक संगीत, लोक वाद्ययंत्रों और कलाकारों का विस्तृत अध्ययन।

लोक संगीत में प्रयुक्त राग एवं ताल

भारत में लोक मेले और त्यौहार।

यूनिट-III

रस और सौंदर्यशास्त्र:

रस, भरत और अन्य के अनुसार रस के सिद्धांत।रस निष्पत्ति और भारतीय शास्त्रीय संगीत में इसका अनुप्रयोग।

भाव और रस, स्वर, लय, ताल, छंद और गीत के संबंध में रस। भारतीय एवं पश्चिमी दार्शनिकों के अनुसार सौंदर्यशास्त्र।

वात्स्यायन के अनुसार 64 कलाओं का सामान्य ज्ञान, राग-रागिनी चित्रकला और राग ध्यान का सामान्य इतिहास।

ललित कलाओं का अंतर्संबंध.

इकाई-IV

शोध पद्धति और शिक्षण शास्त्र, मार्ग, अंतःविषय पहलू और आधुनिक प्रौद्योगिकी:

शोध पद्धति: शोध क्षेत्र, साहित्य की समीक्षा, उपयुक्त शोध विषयों और शोध समस्याओं का चयन, संगीत अनुसंधान की पद्धति, सारांश तैयार करना, डेटा संग्रह और इसके स्रोत, डेटा संग्रह का विश्लेषण, परियोजना रिपोर्ट लिखना, शोध परियोजना अनुक्रमण, संदर्भ और ग्रंथ सूची आदि।

शोध पथ और इसके अंतःविषय पहलू: संगीत और साहित्य, संगीत चिकित्सा, दर्शन, मनोविज्ञान, भौतिकी, गणित, अर्थशास्त्र, सामाजिक विज्ञान, धर्म और संस्कृति।

आधुनिक प्रौद्योगिकी: इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि।

स्वतंत्रता के बाद के युग में भारतीय संगीत में नए रुझान।

हिंदुस्तानी संगीत (स्वर, वाद्य और संगीत शास्त्र)

इकाई-V अनुप्रयुक्त सिद्धांत:

संगीत उत्पत्ति का विस्तृत अध्ययन; संगीत पैमाने (भारतीय और पश्चिमी); ग्राम, मूर्च्छना और चतुःसारना का विस्तृत अध्ययन; जाति लक्षणा, जाति भेद, राग की संकल्पना, राग-लक्षणा। राग का वर्गीकरण: 1) ग्राम राग और देशी राग वर्गीकरण 2) पुरुष राग वर्गीकरण 3) थाट राग वर्गीकरण 4) शुद्ध, छायालग और संकीर्ण राग वर्गीकरण 5) राग-रागिनी वर्गीकरण 6) रागांग वर्गीकरण; रागों का काल सिद्धांत; प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में श्रुतियों पर शुद्ध और विकृत स्वरों का स्थान; लोकप्रिय रागों और तालों का वर्णन; हिंदुस्तानी, कर्नाटक और पश्चिमी संगीत की संकेतन प्रणाली; गायक के गुण और अवगुण; रीमिक्स, फ़्यूज़न, ऑर्केस्ट्रा, कॉयर और ध्वनिक; हिंदुस्तानी और कर्नाटक स्वर और ताल का तुलनात्मक अध्ययन; लोकप्रिय हिंदुस्तानी रागों के कर्नाटक नाम; डुगुन, तिगुन, चौगुन, आद, कुआद और वियाद जैसे विभिन्न लयकारियों का ज्ञान।

यूनिट-VI

भारतीय संगीत का इतिहास, संगीतज्ञों का योगदान और उनकी पाठ्य परंपरा:

वैदिक से आधुनिक काल तक हिंदुस्तानी संगीत के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन;

प्राचीन मध्यकालीन एवं आधुनिक संगीतज्ञ एवं विद्वान:- भरत, नारद, मतंग, सोमेश्वरदेव, जगदेकमल्ल, नान्यदेव, शारंगदेव, पार्श्वदेव, -5- सुधाकलश, महाराणा कुम्भा, रामामात्य, दामोदर पंडित, पं. अहोबल, श्रीनिवास, हृदयनारायण, व्यंकटमाखी, पं. विष्णु दिगंबर पलुष्कर, पं. विष्णु नारायण भातखंडे, पं. विनायक राव पटवर्धन, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, आचार्य बिरहस्पति, ठाकुर जयदेव सिंह, शरचचंद्र श्रीधर परांजपे, भगवत शरण शर्मा, डॉ. प्रेम लता शर्मा, डॉ. सुभद्रा चौधरी, प्रो. आर.सी. मेहता, प्रो. प्रदीप कुमार दीक्षित।

भारतीय संगीत में नाट्य शास्त्र, नारदीय शिक्षा, संगीत मकरंद, बृहददेशी, मानसोलास, संगीत चूडामणि, भारत भाष्य, संगीत रत्नाकर, संगीत समयसार, संगीतोपनिषत्सारोद्धार, संगीत राज, स्वरमलेकलानिधि, संगीत दर्पण, संगीत पारिजात, राग तत्वविबोध, हृदय जैसे प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक ग्रंथों का अध्ययन। कौतुक, हृदय प्रकाश, चतुर्दंडी प्रकाशिका, संगीत चिंतामणि, प्रणवभारती आदि।

भारतीय संगीत में पश्चिमी विद्वानों का योगदान:

कैप्टन एन.ए. विलार्ड विलियम जॉन्स, कैप्टन. सी.आर. डे, ई. क्लेमेंट्स, फॉक्स स्ट्रैंगवेज़, एच.ए. पोपली और एलेन डेनियलौ।

यूनिट-VII

संरचनागत रूप और उनका विकास:

प्रबंध, ध्रुपद, धमार, सादरा ख्याल, तराना, त्रिवत, चतुरंग, सरगम गीत, लक्षण गीत, रागमाला आदि।

ठुमरी, दादरा, टप्पा, होरी, कजरी और चैती आदि। सुगम संगीत: गीत, ग़ज़ल और भजन आदि।

फिरोजखानी गत, मसीतखानी गत, रजाखानी गत और जफरखानी गत और उसके प्रकार।

जाति, जावली, कृति, तिल्लाना, रागम, तानम, पल्लवी।

उपर्युक्त स्वर एवं वाद्य रचनाओं की उत्पत्ति, विकास एवं प्रस्तुति

उपर्युक्त विधाओं के क्षेत्र में लोकप्रिय कलाकार।

यूनिट-VIII

संगीत वाद्ययंत्र और उसका वर्गीकरण

प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल में भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण, प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार की वीणाएँ

तत् - सितार, सरोद, वायलिन, दिलरुबा, इसराज, संतूर, तानपुरा, सुरबहार, गिटार।

घन - जलतरंग, घटम, मोरसिंग, छिपली, मंजीरा, झांझ, करताल

सुशीर - बांसुरी और उसकी किस्में, शहनाई, नागास्वरम, हारमोनियम

अवनद्ध - पखावज, तबला, मृदंगम, कंजीरा, खोल, चंग, नक्कारा, डफ, हुड़का, ढोलक।

इन वाद्ययंत्रों की उत्पत्ति, विकास, बजाने की तकनीक और प्रसिद्ध कलाकार

यूनिट-नौवीं

भारतीय संगीत में संगीतकारों/कलाकारों का योगदान:

तानसेन, हरिदास, गोपाल नायक, सदारंग, पंडित बालकृष्ण बुआ इचलकरंजीकर, पंडित विष्णु दिगंबर पलुश्कर, पंडित विष्णु नारायण भातखंड, उस्ताद फैयाज खान, उस्ताद बड़े गुलाम अली खान, उस्ताद निसार हुसैन खान, पंडित ओंकार नाथ ठाकुर, पंडित विनायक राव पटवर्धन, पंडित नारायण राव व्यास, पंडित सी.आर. व्यास, पंडित कृष्ण राव शंकर पंडित, पंडित मल्लिकार्जुन मंसूर, श्रीमती गंगूबाई हंगल, केसर बाई केरकर, अब्दुल करीम खान, हीराबाई बड़ोदेकर, सुहासिनी कोरेटकर, बड़े रामदास, सिद्धेश्वरी देवी, बेगम अख्तर, शोभा गुर्टू, गिरिजा देवी, सविता देवी, मोघूबाई कुर्दिकर, किशोरी अमोनकर, पंडित कुमार गंधर्व, पंडित जसराज, पंडित बलवंत राय भट्ट। पं. रामाश्रय झा. असद अली खान, पं. लाल मणि मिश्रा, अब्दुल हलीम जफर खान, अली अकबर खान, शरण रानी, अमजद अली खान, अनाथ लाल, पन्ना लाल घोष, विजय राघव राव, रगुनाथ सेठ, हरि प्रसाद चौरसिया, अहमद जान थिरकवा, पं. समता प्रसाद, किशन महाराज, कुदाउ सिंह, पागल दास, बृज भूषण काबरा, विश्व मोहन भट्ट, शिव कुमार शर्मा, भजन सोपोरी, एम.एस. गोपाल कृष्णन, वी.जी. जोग, एन. राजम, अप्पा जलगांवकर, महमूद धौलपुरी। भारत रत्न प्राप्तकर्ता:- एम.एस. सुब्बलक्ष्मी, पं. रविशंकर, उत्साद बिस्मिल्लाह खान, लता मंगेशकर और पं. भीम सेन जोशी. पुरंदर दास, श्याम शास्त्री, मुत्थुस्वामी दीक्षितार, त्यागराज, स्वाति तिरुनल बाख, बीथोवेन, मोजार्ट, याहुदी मेनुहिन,

इकाई-X

हिंदुस्तानी संगीत के घराने और संस्थागत प्रणाली तथा सम्मेलन:

घराने की उत्पत्ति और विकास का सामान्य अध्ययन। संस्थागत प्रणाली और उनका हिंदुस्तानी संगीत में योगदान। ध्रुपद की चार बाणियाँ और हिंदुस्तानी संगीत में उनका महत्व। ध्रुपद खेयाल और वाद्य संगीत के विभिन्न घरानों का सामान्य अध्ययन। गायन और वाद्य संगीत में घरानों की विशेष विशेषताएँ और उनके प्रसिद्ध कलाकार। तुम्हारी के पूरब और पंजाब अंग। भारत में महत्वपूर्ण संगीत सम्मेलन। संगीत के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार। भारतीय संगीत में संगीत शिक्षण संस्थानों अकादमियों, प्रसार भारती, गीत और नाटक प्रभाग और फिल्म का योगदान।

कर्नाटक संगीत

यूनिट-वी

अनुप्रयुक्त सिद्धांत:

संगीत के पैमाने (भारतीय और पश्चिमी), शुद्ध और विकृत स्वर, प्राचीन, मध्ययुगीन और आधुनिक काल में श्रुति, प्राचीन काल में ग्राम, मूर्छना जाति, जाति लक्षण का विस्तृत अध्ययन, राग की अवधारणा, प्राचीन से आधुनिक काल तक रागों का वर्गीकरण, लोकप्रिय रागों के रागलक्षण-एस, मेला - जन्य प्रणाली, कटपयादि और भूत सांख्य, जन्य- राग वर्गीकरण, प्राचीन-पलाई-पान प्रणाली, 22 श्रुतियाँ और स्वरों और रागों के बीच उनका वितरण, सुलादि सप्त ताल, 35 तालों की योजना, ताल दास प्राण, मार्ग और देसी ताल, तिरुपुगज़ के ताल, षडंग और शोडासंग, हिंदुस्तानी संगीत के महत्वपूर्ण राग और ताल। हिंदुस्तानी, कर्नाटक और पश्चिमी संगीत में नोटेशन प्रणालियाँ (स्टाफ़ नोटेशन)। स्वर संस्कृति, आर्केस्ट्रा और ध्वनिकी।

इकाई-VI

संगीत का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य- विद्वानों, संगीतज्ञों का योगदान, ग्रंथों में संगीत संबंधी अवधारणाएँ:

नारद - नारदीय शिक्षा, संगीता मकरंदा; भरत - नाट्य शास्त्र; दत्तिला-दत्तिलम, मतंगा - बृहद्देसी; सोमेश्वर - मानसोल्लस; पार्श्वदेव - संगीत समयसार; सारंगदेव - संगीता रत्नाकर, सिंहभूपाल; नान्यदेव- भरत भाष्यम्; लोचन कवि - राग तरंगिणी; जगदेकमल्ला - संगीता चूड़ामणि; विद्यारण्य - संगीता सारा, रामामात्य - स्वरमेलकलानिधि; राणा कुंभा - संगीता राजा; सोमनाथ - राग विबोध, अहोबला - संगीता पारिजात; गोविंदा दीक्षित - संगीता सुधा; वेंकटमाखी - चतुर्दंडी प्रकाशिका; तुलजा - संगीता सारमृता; गोविंदा आचार्य - संग्रह चूड़ामणि; सुब्बाराम दीक्षितार - संगीत संप्रदाय प्रदर्शिनी; अब्राहम पंडितार - करुणामृत सागरम्; नादमुनि पंडितार - स्वर प्रस्तर सागरम्; अतूर कृष्ण पिशारोती - संगीता चंद्रिका। तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम में सिलप्पदिकारम, संगम ग्रंथ, पंचमराबू, ताल समुद्रम, महाभारत चूड़ामणि, यज़्नूल और अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों में संगीत अवधारणाओं के संदर्भ।

संगीतज्ञ

वी.एन.भातखंडे, वी.डी.पालुस्कर, स्वामी प्रजनानंद, बी.सी.देवा, पी. सांबामूर्ति, एस.सीता, वी.राघवन, प्रेमलता शर्मा, आर.सत्यनारायण, टी.एस.पार्थसारथी, एन.रामनाथन, एस.ए.के. दुर्गा, बलंत्रापु रजनीकांतराव, आर.सी. मेहता और उनके कार्य। भारतीय संगीत में पश्चिमी विद्वानों का योगदान; कर्ट सैक्स, एन.ए.विलार्ड, विलियम जोन्स, सी.आर.डे, ई.क्लेमेंट्स, फॉक्स स्ट्रैंगवेज़, एच.ए.पोपले और एलेन डेनियलौ।

यूनिट-VII

संरचनागत रूप और उनका विकास:

प्रबंध, गीतम, स्वराजति, जातिस्वर्म, तनवर्णम, पदवर्णम, कीर्तन, कृति, पदम, जावली, तिल्लाना, रागम - तनम - पल्लवी, निरावल, कल्पनास्वरा, तेवरम, दिव्यप्रबंधम, तिरुप्पुगज़, थाया, रागमालिका, विरुत्तम, दंडकम, चूर्णिका, श्लोक, दारू, अष्टपदी, तरंगम की उत्पत्ति और विकास। थिरुवैमोझी, थिरुप्पवई, चिंदु, थिरुवसागम, ग्रुप कृतिस। गेया नाटक-ए, नृत्य नाटक- के हिंदुस्तानी संगीत रूप ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, तराना, त्रिवट, चतुरंग, वृंदगान।

यूनिट-VIII

भारत के संगीत वाद्ययंत्र:

संगीत वाद्ययंत्रों के वर्गीकरण की भारतीय अवधारणा। वीणा, तम्बूरा, वायलिन, चित्रा वीणा, वायोला, मैंडोलिन, बांसुरी, नादस्वरम, पंच मुख वाद्यम, मृदंगम, ताविल, कंजीरा, दप्पू, चेंदा, मद्दलम, तिमिला, जलतरंग, घाटम, मोरसिंग, चिपला, जलरा, करतला और अन्य ताल वाद्ययंत्रों की उत्पत्ति, विकास, संरचना और वादन तकनीक। सितार, सारंगी, सरोद, शहनाई, तबला, पखावज, पियानो, गिटार, क्लैरियोनेट का रूपरेखा ज्ञान।

यूनिट-नौवीं

संगीत में संगीतकारों/कलाकारों का योगदान (भारतीय और पश्चिमी):

तेवरम, अलवर, जयदेव, दास कुटा, पुरंदर दास, अन्नामचार्य, तल्लापका संगीतकार, भद्राचल रामदास, अरुणगिरिनाथर, मुथुटांडावर, मारीमुत्तुपिल्लई, अरुणाचल कविरायर, संगीता मुमुर्ती अर्थात, श्यामाशास्त्री, त्यागराज, मुत्तुस्वामी दीक्षितार, स्वाति तिरुनल, गोपालकृष्ण भारती, तंजौर चौकड़ी, पटनम सुब्रमण्यम अय्यर और अन्य प्रमुख पोस्ट ट्रिनिटी संगीतकार। अरियाकुडी रामानुज अयंगर, मुसिरी सुब्रमण्यम अय्यर, जी.एन. बालासुब्रमण्यम, महाराजपुरम विश्वनाथ अय्यर, सेमंगुडी श्रीनिवास अय्यर, चेम्बई वैद्यनाथ भगवतार, के.वी. नारायण स्वामी, एम.डी. रामनाथन, आर.के. श्रीकांतन, एम.बालमुरली कृष्णा, एम.एस.सुब्बालक्ष्मी, डी.के. पट्टम्मल, एम.एल.वसंतकुमारी, बृंदा, मुक्ता और अन्य प्रमुख गायक। कराईकुडी सांबा शिव अय्यर, वीणा धनम्मल, एस.बालाचंदर, मैसूर दोराईस्वामी अयंगर, एस.बालाचंदर, चित्तीबाबू, मैसूर चौदिया, लालगुडी जयारमन, द्वारम वेंकटस्वामी नायडू, टी.एन.कृष्णन, एम.एस.गोपालकृष्णन, सराभा शास्त्री, टी.आर.महालिंगम, एन.रमानी, शेख चिन्ना मौलाना, अमबालापुझा ब्रदर्स, नामागिरी पेट्टई कृष्णन, पालघाट मणि अय्यर, पलानी सुब्रमण्यम, विकु विनायकराम, हरिशंकर और वीणा, वायलिन, बांसुरी, नादस्वरम, मृदंगम, घटम और कंजिरा के अन्य प्रमुख संगीतकार।

इकाई-X

प्रमुख बानी, संगीत प्रशिक्षण, शिक्षा और प्रचार:

गुरुकुल संप्रदाय के गुण और सीमाएँ, विश्वविद्यालयों में संस्थागत प्रशिक्षण और शैक्षणिक शिक्षण प्रणाली नागस्वरम बानी - तंजावुर शैली, मृदंग बानी - तंजावुर, पुदुकोटाई और पालकाडु शैलियाँ, धनम्मल स्कूल, अरियाकुडी, मुसिरी, जीएनबी, महाराजपुरम, चेम्बाई और सेम्मनगुडी की बानी। संगीत की शैलियाँ त्रिमूर्ति और उनके रागों का विश्लेषण, विभिन्न संगीत संस्करणों के साथ रचनाएँ। संगीत अकादमियों, प्रसार भारती, गीत और नाटक प्रभाग, फिल्मों, तिरुवैयारु, चेम्बाई, मेलत्तूर जैसे संगीत समारोहों के माध्यम से संगीत का प्रचार। कर्नाटक संगीत पर अन्य संगीत प्रणालियों का प्रभाव - हिंदुस्तानी और पश्चिमी। संगीत में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार।

टक्कर

यूनिट-वी

अनुप्रयुक्त सिद्धांत

ताल और अवनाधवाद्य: तबला और पखावज वाद्ययंत्रों में वर्णों और उनके संयोजनों का वर्णन और वादन तकनीक। ताल के दस प्राण (विस्तृत अध्ययन)। मार्गी और देशी ताल प्रणाली (पद्धति) का विस्तृत अध्ययन, कर्नाटक ताल प्रणाली का ज्ञान: उत्तर भारतीय संगीत में प्रयुक्त उत्तर भारतीय ताल पद्धति और तालों का विस्तृत ज्ञान। रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त तालों का संक्षिप्त ज्ञान। लय और लयकारी। हिंदुस्तानी और कर्नाटक ताल संकेतन प्रणाली का विस्तृत ज्ञान। स्टाफ नोटेशन प्रणाली का संक्षिप्त ज्ञान। स्वर, (शास्त्रीय, अर्ध-शास्त्रीय संगीत) वाद्य संगीत और कथक नृत्य के साथ तबला संगत। ताल और छंद का संबंध, विभिन्न मात्राओं की तिहाइयों की रचना का ज्ञान। तिहाई का विस्तृत ज्ञान - दमदार, बेदम, नौहक्का और चक्रदार तिहाई। चक्रदार की गणितीय गणना- (साधारण, फ़िरमैशी और कमाली चक्रदार)। चक्रदार गत, चक्रदार टुकड़ा और चक्रदार परन में अंतर. बत्तीस तिहाई के चक्र का वर्णन आचार्य बृहस्पति ने किया है।

यूनिट-VI

संगीत का इतिहास, ट्रेइज़ और म्यूसोकॉलिजिस्ट का योगदान:

भरत, शारंगदेव, मातंग, पार्श्वदेव नान्यदेव, रामामात्य, सोमनाथ, दामोदर पंडित, अहोबल, वेंकटमाखी, वी.एन. भातखंडे, वी.डी. पलुस्कर, पुंडरीक विट्ठल, डॉ. सुभद्रा चौधरी, निखिल घोष, मधुकर गणेश गोडबोले, स्वामी पागल दास, पुरषोत्तम दास पखावाजी, गिरीश चंद्र श्रीवास्तव, भगवतशरण शर्मा, प्रो.

निम्नलिखित ग्रंथों का विस्तृत अध्ययन:

नाट्य शास्त्र, संगीत रत्नाकर, बृहद देशी, संगीत समयसार संगीत राज, अष्टोत्तर शत ताल, लक्षणम, भारतीय संगीत वाद्य, तालिका का उदगम विकास एवं वादन शैलियां, भारतीय तालों का शास्त्री विवेचन, पखावज एवं तालिका के घराने एवं, परंपराएं, ताल कोश, तबला वादन कला एवं शास्त्र, तबला, भारतीय ताल में अनेकता में एकता, तबले का सौंदर्यशास्त्र, तबला पुराण, ताल वाद्य परिचय, तबला ग्रंथ मंजूषा, लय ताल विचार मंथन, तबला वादन में निहित सौंदर्य, उत्तर भारत का एकल तबला ढोल वादन, लखनऊ का तबला, ताल वाद्य शास्त्र, भारतीय संगीत पुरुष ताल, छंद एवं रूप विधान।

यूनिट-VII

अवनद्ध वाद्यों के रचना रूपों का विस्तृत अध्ययन

बंदिश की परिभाषा - विस्तारणीय और अप्राप्य रचनाएँ। बंदिशें का सौंदर्यशास्त्र। बंदिशेन की प्रस्तुति का महत्व ठेका, पेशकार, कायदा और उसके प्रस्तार (पलटास), बंट, रेला, राऊ, टुकड़ा, मुखड़ा, गत और उसके विभिन्न प्रकार, रंग-रेला, फिरद, परन, -15- विभिन्न प्रकार के तिहाई का विस्तृत अध्ययन। विभिन्न घरानों के गत और कायदा, लग्गी लाडी। शास्त्रीय गायन, अर्ध शास्त्रीय एवं वाद्य संगीत में प्रचलित विभिन्न रचनाओं का अध्ययन:- ख्याल, मसीतखानी गत, रजा खानी गत, ठुमरी, दादरा, टप्पा, कजरी, चैती, ध्रुपद, धमार, सदरा, झूला, भजन, गजल, गीत। कथक नृत्य में प्रयुक्त रचनाओं का सामान्य ज्ञान:- आमद, परन, तत्कार, तोड़ा, स्तुति परन।

यूनिट-VIII

संगीत वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण, भारत में प्राचीन काल से वर्तमान काल तक के संगीत वाद्ययंत्रों का वर्णन।

भरत, शारंगदेव और डॉ. लालमणि मिश्र द्वारा वर्णित अनुसार भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण। निम्नलिखित वाद्ययंत्रों की उत्पत्ति, विकास, संरचना और वादन तकनीक का विस्तृत अध्ययन:- क) तत् वाद्य:- वीणा, विचित्र वीणा, नारदीय वीणा, सरस्वती वीणा, रुद्र वीणा, सितार, सरोद, सारंगी, वायलिन, दिलरुबा, इसराज, संतूर, सुरबहार, तानपुरा, गिटार, एकतारा, दोतारा। ख) सुषिर वाद्य:- बांसुरी, शहनाई, नागस्वरम, क्लारोनेट, अलगोजा, सुंदरी, मागुटी। ग) अवनद्ध वाद्य:- पनव, पटह, मिरदंग, पखावज, तबला, मृदंगम, तविल, खंजीरा, खोल, चेंदा, चंग, उपंग, डफ, नक्कारा, ढोल, ढोलक, संबल, ढोलकी, नाल, हुडका, पुंग। घ) घन वाद्य:- जल-तरंग, नल-तरंग, घाटम, मोरसिंक, चिपली, जलरा, करताल, झांझ, मंजीरा। पश्चिमी संगीत में प्रयुक्त लोकप्रिय वाद्ययंत्र:- किटल ड्रम, स्नेयर ड्रम, बैस ड्रम, टेनर ड्रम और अन्य महत्वपूर्ण वाद्ययंत्र।

यूनिट-नौवीं

कलाकार एवं संगीतकार:-

तबला:- नत्थू खान, मोडू खान, बक्शू खान, आबिद हुसैन खान, हाजी विलायत अली, सलारी खान, चूड़िया इमाम बक्श, राम सहाय, मुनीर खान, हबीबुद्दीन खान, अहमदजान थिरुकुवा, अमीर हुसैन, जहांगीर खान, शेख दाउद, बड़े मुन्ने खान, करमतुल्लाह खान, अल्लारखा खान, ज्ञान प्रकाश घोष, निखिल घोष, गामा महाराज, किशन महाराज, कंठे महाराज, समता प्रसाद (गुदई महाराज), अनोखे लाल मिश्रा, भाई गायतोंडे, पंढरीनाथ नागेशकर, सुरेश तलवलकर, हशमत अली खान, जाकिर हुसैन और समकालीन तबला और पखावज जादूगर और विद्वान। पखावज:- कुदाऊ सिंह जोधसिंह, नाना पांसे, अयोध्या प्रसाद, पागल दास, छत्रपति सिंह, अर्जुन सेजवाल, माधव राव अलकुटकर, सखारा राम। नक्कारा वदक:- दिलावर खान, अग्गन खान। ढोलक वादक:- बफाती खान, गुलाम जाफर, ढोलकी:- विजय चौहान।

कर्नाटक संगीत:- गायक और वादक

भारत रतन सुब्बालक्ष्मी, एस. बालचंदर, बाल मुरलीकृष्णन, लालगुडी जयरमन, टी.एन. कृष्णन, पालघाट रघु, पालघाट मणि अय्यर, उमायलपुरम शिवरामन, यू. श्रीनिवासन, विक्कू विनायक राम, हरि शंकर।

उत्तर भारतीय गायक एवं वादक:-

अलाउद्दीन खान, विलायत खान, रविशंकर, अब्दुल हलीम जाफर, बलराम पाठक, निखिल बनर्जी, हफीज अली खान, अली अकबर खान, अमजद अली खान, वी.जी. जोग, डी.के. दातार, एन राजम, हरि प्रसाद चौरसिया, पन्नालाल घोष, बिस्मिल्लाह खान, अली हुसैन, सिद्धराम जाधव, कृष्णा राव -17- शंकर पंडित, मोगुबाई कुर्दीकर, केसर बाई केरकर, मल्लिकार्जुन मंसूर, अब्दुल करीम खान, फैयाज खान, भीमसेन जोशी, गंगूबाई हंगल मालिनी राजुरकर, किशोरी अमोनकर, जस राज, कुमार गंधर्व और आमिर खान।

नर्तक:-

अच्छन महाराज, लच्छू महाराज, सितारा देवी, गोपी कृष्ण, बिरजू महाराज, दुर्गा लाल, यामिनी कृष्णमूर्ति संयुक्ता पाणिग्रही और कल्याणी कुट्टी अम्मा। संगीत, नृत्य, लोक संगीत और लोक नृत्य के क्षेत्र में सभी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, विशेष रूप से तालवाद्य वादकों के संदर्भ में।

यूनिट एक्स

संगीत में घरानों और संस्थागत व्यवस्था का विस्तृत अध्ययन

बाज और घरानों की परिभाषा. तबला और पखावज घराने, दिल्ली घराना, अजरदा घराना, फर्रुखाबाद घराना, लखनऊ घराना, बनारस घराना, पंजाब घराना, नाना पनासे घराना, कुदाऊ सिंह घराना का ऐतिहासिक मूल्यांकन और विकास। विभिन्न घरानों में वर्ण निकास (वादन तकनीक)। घरानों के आधार पर पेशकार, क्विडा, रेला, गत, टुकड़ा, परन, तिहाई, चक्रदार और लंबी लड़ी की मुख्य विशेषताएं। शास्त्रीय संगीत, अर्ध शास्त्रीय, सुगम और फिल्म संगीत में तबला और पखावज का महत्व और उपयोगिता। विश्वविद्यालय, अकादमियाँ और अन्य संस्थान, प्रख्यात प्रोफेसर, गुरु, शिक्षाविद, प्रशासक जो संगीत का प्रचार कर रहे हैं।

रवींद्र संगीत

यूनिट-V

अनुप्रयुक्त सिद्धांत:

चौबीसों घंटे चलने वाले रागों और रागिनियों का ज्ञान, तालों का ज्ञान, कीर्तन, बाउल और बंगाल के अन्य लोकगीतों का ज्ञान, मानसून और वसंत के रागों और रागिनियों का ज्ञान, चयनित प्रांतीय गीत, वेदों और उपनिषदों से चयनित छंद जिन्हें टैगोर अक्सर गाते थे। रवींद्र नाथ टैगोर ने विशेष रूप से तालों का निर्माण किया, जैसे झंपक (5 मात्रा), षष्ठी (6 मात्रा), रूपक (8 मात्रा), नवताल (9 मात्रा), एकादशी (11 मात्रा), नवपंचताल (18 मात्रा)। मूलगान और भंग गान। टैगोर द्वारा रचित ब्रह्मा संगीत। टैगोर के काव्य गीत (कव्यगीत), वैदिक भजन (टैगोर द्वारा रचित)। देशभक्ति गीत। अकर्मात्रिक संकेतन प्रणाली।

इकाई-VI

संगीत का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:

टैगोर और भारत तथा विदेश की प्रमुख हस्तियों के बीच बातचीत। टैगोर संगीत पर पश्चिमी विद्वान। 'संगीत चिंता' टैगोर पुस्तक का पूर्ण अध्ययन। टैगोर पर समग्र रूप से यूरोपीय संगीत का प्रभाव। यूरोपीय संगीत और प्रांतीय धुन का प्रभाव। गीत लेखन और संगीत रचनाओं में टैगोर की रचनात्मक यात्रा। टैगोर गीतों के संकलन का इतिहास। ध्रुपद, खेयाल, टप्पा, ठुमरी पर विशेष जोर देने के साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत में बुनियादी ज्ञान। संकेतन और ताल (भारतीय और पश्चिमी) का ज्ञान।

इकाई-VII

रचना के रूप और उनका विकास:

रवींद्र संगीत के लिए मुख्य रूप। गीतांजलि और गीत प्रस्तुतियाँ - एक पाठ्य अध्ययन। टैगोर की जीवनी: टैगोर के जीवन भर गीतांजलि युग तक संगीतकार। गीतांजलि के बाद 1941 तक संगीतकार (दूसरा भाग)। बरसमंगल, सरोदोत्सव आदि। रवींद्र संगीत के माध्यम से रवींद्रनाथ टैगोर का सौंदर्य दृष्टिकोण। टैगोर का संगीत दर्शन, साहित्येर पथ, साहित्य, साहित्येर स्वरूप। अपने शुरुआती दिनों में टैगोर का संगीत दर्शन। निबंधों, कविताओं, उपन्यासों आदि में व्यक्त टैगोर के संगीत दर्शन की अवधारणा। राग का ज्ञान। बंगाली गीत: रवींद्रनाथ के पहले और बाद का युग। रवींद्रनाथ के अलावा अन्य लेखकों के ब्रम्हसंगीत और देशभक्ति गीत। ब्रम्हसंगीत: टैगोर परिवार के अलावा अन्य लेखकों के गीत। बेदगान, माघोत्सव, उपासना गीत, टैगोर हाउस के गीत, हंसिरगान।

यूनिट-VIII

भारत का संगीत वाद्ययंत्र:

रवीन्द्र संगीत में उपयोग किए जाने वाले लोकप्रिय वाद्ययंत्र, अर्थात् एसराज, गिटार, की बोर्ड, सितार, तानपुरा, हारमोनियम, सरोद, वायलिन, मंदिरा, ऑर्गन - पियानो, बांसुरी और इसकी किस्में, पखावज, तबला, श्री खोल, ढोल, मृदंगम, जलतरंग आदि। रवीन्द्र संगीत: लय और ताल में प्रयोग, विभिन्न ताल और ताल का अनुप्रयोग। सुरंतर और छंदांतर।

यूनिट-नौवीं

विद्वानों/कलाकारों का योगदान और उनकी पाठ्य परंपराएँ:

टैगोर के गीतिनाट्य और नृत्यनाट्य जैसे वाल्मिकी प्रतिव, कल्मृगया, मायर खेला, चित्रांगदा, चांडालिका, श्यामा, तासेर देस, शपमोचन आदि और विभिन्न गीतों से भरे अन्य नाटक, जैसे प्रायश्चित्त, विसर्जन, मुक्तधारा, अचलायतन, राजा, रक्तकरबी, फाल्गुनी, बसंत, शिशुतीर्थ, रिंसोध, राजा ओ रानी, प्रकीतिर प्रतिशोध। तापती आदि (सभी नाटकीय कार्य और उदाहरण गीताबिटान में टैगोर की संगीत रचनात्मकता - एक पाठ्य अध्ययन (भाग I, II, III) और स्वराबितन (नोटेशन पुस्तकें) 1- 66 और अन्य। भानुसिंघेर पदबली, रितुनाट्य। टैगोर के गीतों के संकलन का इतिहास।

विद्वान/कलाकार/संगीतकारों का योगदान

प्रतिभा देवी, सुबिनॉय रॉय, नीलिमा सेन, इंदिरा देवी चौधुरानी, माया सेन, सुचित्रा मित्रा, कनिका बंद्योपाध्याय, शांतिदेव घोष, ज्योतिरींद्रनाथ टैगोर, देबेंद्रनाथ टैगोर, शैलजारंजन मजूमदार, अनादि दस्तीदार, कंगालीचरण सेन, अमिय ठाकुर, भीमराव शास्त्री, एसेस बंद्योपाध्याय, गिरिजाशंकर चक्रवर्ती, रमेश चंद्र बंद्योपाध्याय, राजेश्वरी दत्ता, शंख घोष, सुधीर चक्रवर्ती वगैरह।

इकाई-X

घराना और संगीत की संस्थागत प्रणाली:

टैगोर की संगीत रचनात्मकता का समग्र सर्वेक्षण, टैगोर की संगीत रचनाओं की तानवाला और लयबद्ध विविधताएँ जिनमें उनकी अपनी प्रयोगात्मक विविधताएँ शामिल हैं। टैगोर की संगीत रचनाओं के काल और चरण। टैगोर की संगीत रचनाओं के काल और चरण (कालानुक्रमिक क्रम बनाए रखा जा सकता है)। रवींद्र संगीत पर हिंदुस्तानी, कर्नाटक और पश्चिमी संगीत का प्रभाव, रचनाएँ जिन्होंने रवींद्र संगीत को प्रभावित किया। फिल्मों में इस्तेमाल किए गए टैगोर गीत। टैगोर के गीत: -21- मूल गीतों के साथ टप्पा, ठुमरी, तराना और भजन से अनुकूलित धुनें। टैगोर के परिवार का सांस्कृतिक वातावरण (पथुरियाघाटा और जोरासांको, कोलकाता)। टैगोर के संगीत की विषयगत विविधताएँ: (पूजा, प्रेम, स्वदेश, प्रकृति, विचित्रा, अनुष्ठानिक) रवींद्र संगीत के त्यौहार गीत। हिंदुस्तानी गीतों का ज्ञान और इन गीतों पर टैगोर की राय। भारत और बांग्लादेश का राष्ट्रगान। शास्त्रीय धुन पर आधारित रवींद्र संगीत